भूमिका

'आदिवासी' शब्द का नाम आते ही हमारे जेहन मे ऐसे लोगो की छवि बनती है जो एक विशेष भौगोलिक स्थान पर निवास करते हुए प्रकृति के सहचर बनकर अपना जीवन यापन करते है। प्रकृति के लगाव का ही फल है कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, जीवन शैली, तकनीक, सुख-भोग से दूरी बनाए रखते हुए वे आज भी अपनी 5000 वर्षो पुरानी सभ्यता को लगातार बनाएं हुए है और अपनी इसी सभ्यता के भीतर इन्होंने अपनी हर समस्यां का हल भी खोज रखा है। कभी-कभी तो ये लगता है कि इनकी चिकित्सकीय पद्धति के तरीके जीवन शैली स्त्री-स्वतंत्रता, श्रम विभाजन पारस्परिक सहयोग की भावना, प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध आज विकास के बड़े वायदे करने वाले तथाकथित सभ्य समाज से कहीं ज्यादा उन्नत विकासशील एवं मानवीय मूल्यों का सहजने वाले हैं। परंतु इनकी सभ्यता संस्कृति भाषा एवं जीवन को असभ्य, बर्बर तथा पिछडा हुआ कहकर तथाकथित सभ्य समाज ने इन पर अंतहीन जुल्म की प्रक्रिया प्रारम्भ की है जिसके फल स्वरूप इनकी भाषा सभ्यता, संस्कृति ही नहीं वरन् इनके सम्पूर्ण समुदाय का अस्तित्व ही खतरे में है।

भोगवादी संस्कृति के लोगो ने आदिवासियों का जल, जंगल, जमीन लूटकर उनको भूमिहीन भूखा तथा बेरोजगार बना दिया है। भोगवादी संस्कृति के इस लूट से सबसे ज्यादा प्रभावित हुई है आदिवासी स्त्रियाँ क्योंकि भोगवादी मानसिकता के लोग स्त्री को एक वस्तु से ज्यादा कुछ नहीं मानते है और नानाविधि से उनका शोषण करते है। इस नानाविधि के शोषण में उनका बलात्कार खरीद फरोख्त करना, यौन शोषण, कालगर्ल, आया, नन तथा श्रम का कम मूल्य देने तक के कुकृत्य शामिल है, जिसके फलस्वरूप आदिवासी समाज की स्त्रियां बहुत ज्यादा डरी सहमी और आक्रोशित है। इनका आक्रोश व्यक्तिगत नहीं वरन् सामूहिक है। अपने इस प्रतिरोध को उन्होंने सृजनात्मक स्वरूप दिया है, जिसकी अभिव्यक्ति कविताओं के माध्यम से हुई है।

परास्नातक में अध्ययन के दौरान जब विमर्शों की बात होती तो **दलित, स्त्री एवं आदिवासी** तीन विमर्शो के नाम उभर के सामने आते जिसमें स्त्री एवं दलित विमर्श पर तो खूब चर्चा होती लेकिन आदिवासी विमर्श कहीं पीछे छूट जाता। मेरे मन मे सदा यह उत्कंठा रही की मैं स्त्री एवं दलित विमर्श के साथ आदिवासी विमर्श का भी अध्ययन करूँ। जब मुझे एम.फिल. करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और एक लघु शोध प्रबंध लिखने की बात आयी तो मैंने बिना किसी देरी के इस शीर्षक को अपने लघु शोध प्रबंध हेतु प्रस्तावित किया तो गुरूजनों ने सहमति ही नहीं प्रकट की वरन् मुझे इस विषय पर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित भी किया। (यह लघु शोध प्रबंध तीन अध्यायों में विभाजित है)

प्रथम अध्याय- में हम आदिवासी शब्द का अर्थ एवं परिभाषा, आदिवासियों का इतिहास, आदिवासी भाषाओं तथा उनमें रचित साहित्य का परिचय, आदिवासी साहित्य की केन्द्रीय विषय वस्तु तथा प्रमुख आदिवासी तथा गैर आदिवासी कवि एवं कवयित्रियों का परिचय देने का प्रयास करेगें।

द्वितीय अध्याय- मे हम आदिवासी कविताओं मे अभिव्यक्त स्त्रियो के मुद्दों को दिखाने का प्रयास करेगें।

तृतीय अध्याय- में हम आदिवासी कविताओं में अभिव्यक्त स्त्री प्रतिरोध को दिखाने तथा उनका विश्लेषण करने का प्रयास करेगें। इस लघु शोध प्रबंध के अंत में मूल्यांकन के तौर पर उपसंहार प्रस्तुत किया गया है।

इस लघु शोध प्रबंध को मुकम्मल रूप प्रदान करने में जिन लोगो ने अपना अमूल्य समय देकर मेरा मार्गदर्शन किया है उनका आभार प्रकट करके मैं उनको अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूँ। इस क्रम में सबसे पहले मैं अपने शोध निर्देशक प्रो. शंभु गुप्त का बहुत बहुत आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने बहुत कम शब्दों मे मेरी गलतियों को सुधारा और मैं उनकी उस भावना का कद्र करता हूँ जिसके तहत वे किसी इंसान के बंधन मुक्त जीवन की

कल्पना करते हैं। मैं आभारी हूँ प्रो. वासंती रमन् का जिन्होंने समय समय पर विषय से संबंधित समस्याओं को सुलझाने में मेरी मदद की है।

मैं डॉ. सुप्रिया पाटक का बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने लगातार मेरे इस कार्य पर विशेष ध्यान रखा, जब भी उनकी निगाह हमारे ऊपर पड़ती उनका पहला ही शब्द होता 'विकास तुम्हारा काम कैसा चल रहा है' उनके शब्द लगातार भयादोहन करते रहे उसी का परिणाम है कि आज यह लघु शोध प्रबन्ध आपके सामने है। मैं श्रीमती अवन्तिका शुक्ला के उचित मार्गदर्शन के लिए भी âद्य से आभार प्रकट करता हूँ। विभाग के कर्मचारियों सुश्री शुभांगी, श्रीमती काँचन एवं गणेश भाऊ का अपेक्षित सहयोग मिलने के लिए आभारी हूँ। इस लघु शोध प्रबंध को पूरा करने में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अध्ययनरतअग्रज रविरंजन सिंह का विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने प्रो. वीरभारत तलवार एवं नवोदित आदिवासी कवयित्री नितीशा खलको से मेरा परिचय करवाया इसके अतिरिक्त अपने अग्रज शिवम् सिंह, प्रशांत सिंह, राजकुमार, चेतन सोरेन, अमरेन्द्र प्रताप सिंह तथा प्रदीप त्रिपाठी का भी बहुत-बहुत आभार जिनके अमूल्य सहयोग को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। आभार की सूची बहुत बोझिल न हो इस लिए वर्धा विश्वविद्यालय और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के किसी भी सहपाठी के सहयोग को कागज पर अंकित न करके उनके सहयोग को हद्य में आत्मसात कर रहा हूँ.....।